जहाँ चाह वहाँ राह

छब्बीस साल की इला गुजरात के सूरत ज़िले में रहती हैं । उनका पुराना नाम इला सचानी है। उनका बचपन अमरेली ज़िले के राजाकोट गाँव में अपने नाना के यहाँ बीता।

मोहल्ले के सभी बच्चे तरह–तरह के खेल खेलते। कभी–कभार वह, पकड़म–पकड़ाई और विष–अमृत के खेल में शामिल हो जाती। साथियों के साथ जमकर दौड़ती मगर जब "धप्पा" करने की बारी आती तो फिर निराश हो जाती। हाथ ही नहीं उठेंगे तो धप्पा कैसे देगी ? वह बहुत कोशिश करती पर उसके हाथों ने तो जैसे उसका साथ न देने की ठान रखी हो। इला ने अपने हाथों की इस ज़िद को एक चुनौती माना।

उसने वह सब अपने पैरों से करना सीखा जो हम हाथों से करते हैं जैसे– दाल–भात खाना, दूसरों के बाल बनाना, फ़र्श बुहारना, कपड़े धोना, तरकारी काटना तख्ती पर लिखना आदि। उसको स्कूल में दाखिला मिलने में भी परेशानी हुई। वह परेशानियों के आगे घुटने टेकने वाली नहीं थी। उसने दसवीं कक्षा तक पढ़ाई की। मगर वह दसवीं की परीक्षा पास नहीं कर पाई ।

उसकी माँ और दादी कशीदाकारी करती थीं। उसने कशीदाकारी का काम पैर से करना सिख लिया । वह काठियावाड़ी कशीदाकारी में माहिर हो चुकी थी । एक समय ऐसा भी आया जब उसके द्वारा काढ़े गए परिधानों की प्रदर्शनी लगी।इन परिधानों में काठियावाड़ के साथ–साथ लखनऊ और बंगाल भी झलक रहा थ। उन्हें कई अवार्ड भी मिले।

इला के पाँव अब रूकते नहीं हैं । आँखों में चमक, होंठो पर मुस्कान और अनूठा विश्वास लिए वह अपना काम करते थकती नहीं हैं ।

अभ्यास कार्य

नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर अनुच्छेद की मदद से लिखिए–

प्र.1इला कहाँ रहती है?

.....

प्र. 2उनका पूरा नाम क्या है?

.....

प्र. 3 वह किन खेलों में शामिल हो जाती थी?

.....

प्र. 4 इला अपना काम कैसे करती थीं ?

.....

प्र. 5 इला ने कहाँ तक पढ़ाई की थी ?

.....

प्र. 6 इला अपने पैरों से क्या–क्या काम करती थी ?

.....

.....

प्र. 7 इला किस काम में माहिर होगई थी ?

.....

प्र.8शब्द युग्म वाले शब्द ढूँढकर लिखो ?

.....

रवीन्द्र कुमार वर्मा
पी.आर.टी.
के.वि. अनन्तनाग